श्रीपुरुषोत्तम-मास-माहात्म्य

(ॐ विष्णुपाद श्रील भक्तिविनोद ठाकुर)

स्मार्त तथा परमार्थ के आधार पर शास्त्र द्विविध

'स्मार्त' और 'परमार्थ' के आधार पर वैदिक आर्य-शास्त्र दो भागों में विभक्त हैं। जो लोग स्मार्त-विभाग के अधिकारी हैं, वे स्वाभाविक रूप से 'परमार्थ' शास्त्र में रुचि नहीं लेते। अपनी-अपनी रुचि के अनुसार ही मनुष्य का विचार, सिद्धान्त, क्रिया तथा जीवन का उद्देश्य गठित होता है। स्मार्तगण अपनी-अपनी रुचि-अनुसार शास्त्रों में अधिक विश्वास करते हैं। पारमार्थिक-शास्त्रों में उनका उस प्रकार का अधिकार नहीं रहने पर उस तरह की आस्था भी व्यक्त नहीं करते हैं। इस प्रकार के विभाग के कर्ता—विधाता हैं। अतः इसमें जगदीश्वर का एक गुप्त उद्देश्य है, संदेह नहीं है। हमको जितनी जानकारी मिली है, वह उद्देश्य है कि,—अपने-अपने

18 Sep 2020

अधिकार में रहने से ही जीव की क्रमोन्नति होती है। अधिकार -च्युत होने पर ही पतन होता है। मानवगण अपने-अपने कर्म अनुसार कर्म-अधिकार तथा भक्ति-अधिकार—दो अधिकार लाभ करते हैं। जब तक मनुष्य का कर्म-अधिकार रहता है, तब तक उसके लिए स्मार्त पथ ही श्रेष्ठ है। कर्माधिकार अतिक्रम कर जब वे भक्ति के अधिकार में प्रवेश करते हैं, तब उनकी पारमार्थिक पथ में स्वाभाविक रुचि उत्पन्न होती है। इसीलिए विधाता ने स्मार्त-परमार्थ के आधार पर दो प्रकार के शास्त्रों की व्यवस्था की है।

स्मार्त-शास्त्रों के विधि-विधान—कर्म पर आधारित

स्मार्त-शास्त्रों ने मनुष्यों को सदैव कर्माधिकार में निष्ठा लाभ कराने की चेष्टा में अनेक प्रकार के नियम बनाये हैं। यहाँ तक कि, उन समस्त विधि-विधानों में विशेष निष्ठा देने के कारण परमार्थ-शास्त्रों के प्रति कई स्थानों पर उदासीनता भी दिखायी है। वस्तुतः शास्त्र एक होने पर भी लोगों के सामने इसके दो प्रकार के भाव हैं। अधिकार के प्रति निष्ठा के बिना जीवों का मंगल नहीं होता है। इसीलिए शास्त्र स्मार्त-परमार्थ के आधार पर दो प्रकार के प्रतीत होते हैं।

अधिमास सत्कर्महीन, इसका अन्य नाम—मलमास

वर्ष को बारह भागों में विभक्त कर, बारह महीनों में स्मार्त-शास्त्रों ने सभी सत्कर्मों का निरूपण किया है। वर्णाश्रम के आधार पर जब समस्त कर्म ही बारह महीनों में विभक्त हो गये तब **'अधिमास'** कर्महीन मास हो गया। अधिमास में कोई सत्-कर्म नहीं होता है। चान्द्र-मास तथा सौर-मास में सामंजस्य बनाये रखने के लिये बत्तीस महीनों में एक महीना छोड़ देना पड़ता है। उसी मास का नाम है **अधिमास**। स्मार्तगण ने अधिमास को 'मलमास'

कहकर त्याग दिया है। मलिम्लुच (चोर), मलिन-मास आदि नाम देकर अधिमास को घृणित बताया है।

परमार्थ-शास्त्र में अधिमास श्रेष्ठ तथा हरि-भजनोपयोगी

इधर परमाराध्य परमार्थ-शास्त्र अधिमास को परमार्थ-कार्य में सर्वोपरि श्रेष्ठ कहते हैं। जीवन अनित्य है। जीवन का कोई अंश भी व्यर्थ नहीं बिताना चाहिये। सर्वदा प्रत्येक क्षण हरि-भजन में रहना ही जीव का कर्त्तव्य है। अतः हर तीसरे साल जो अधिमास होता है, वह भी हरि-भजन के उपयोगी बने—यही परमार्थ शास्त्र की निगूढ़ चेष्टा है। फिर जब कर्मी लोग उस मास को सत्कर्म-शून्य के रूप में जानते हैं, तब सभी जीवों के उद्धार के लिए परमार्थ-शास्त्र ने उस समय को भजन के लिए विशेष उपयोगी निर्धारित किया है। परमार्थ-शास्त्र कहते हैं कि, हे जीव! अधिमास में हरि-भजन में आलस्य क्यों करते हो? **यह मास श्रीमद् गोलोकनाथ के द्वारा सर्वोपरि स्थापित हुआ है; यहाँ तक कि कार्तिक, माघ तथा वैसाख आदि मास की अपेक्षा भी यह श्रेष्ठ है।** इस मास में विशेष भजन-विधि के साथ श्रीश्रीराधा-कृष्ण का अर्चन करो। सब कुछ प्राप्त हो जायेगा।

अधिमास को 'पुरुषोत्तम'-नाम की प्राप्ति

नारदीय पुराण में अधिमास का माहात्म्य 31वें अध्याय में वर्णित है। द्वादश मास का आधिपत्य और अपना अपमान होते देख अधिमास ने वैकुण्ठ में जाकर नारायण को अपना दुःख सुनाया। वैकुण्ठ-पति कृपा कर अधिमास को साथ लेकर गोलोकपति श्रीकृष्ण के पास पहुँचते हैं। श्रीकृष्ण मलमास की आर्त्ति श्रवणकर दयापरवश बोले—

अहमेतैर्यथा लोके प्रथितः पुरुषोत्तमः।
तथायमपि लोकेषु प्रथितः पुरुषोत्त्मः।।

अस्मै समर्पिताः सर्वे ये गुणमयि संस्थिताः।
मत्सादृश्यमुपागम्य मासानामधिपो भवेत्।।
जगत्पूज्यो जगद्वन्द्यो मासोऽयं तु भविष्यति।
सर्वे मासाः सकामाश्च निष्कामोऽयं मयाः कृतः।।
अकामः सर्वकामो वा योऽधिमासं प्रपूजयेत्।
कर्माणि भस्मसात् कृत्वा मामेवैष्यत्यसंशयम्।।
कदाचिन्मम भक्तानामपराधेति गण्यते।
पुरुषोत्तम-भक्तानां नापराधः कदाचन।।
य एतस्मिन्महामूढ़ा जप-दानादि-वर्जिताः।
सत्कर्म-स्नान-रहिता देव-तीर्थ-द्विज-द्विषः।।
जायन्ते दुर्भगा दुष्टाः पर-भाग्योपजीविनः।
न कदाचित् सुखं तेषां स्वप्नेऽपि शशशृंगवत्।।
येनाहमर्च्चितो भक्त्या मासेऽस्मिन् पुरुषोत्तमे।
धन-पुत्र-सुखं भुंक्त्वा पश्चाद्गोलोकवासभाक्।।

इसका अर्थ यह है कि,—हे रमापति! मैं जिस प्रकार से इस जगत में 'पुरुषोत्तम' के रूप में विख्यात हूँ, उसी प्रकार यह अधिमास भी पुरुषोत्तम के नाम से जगत में विख्यात होगा। मुझमें जितने सभी गुण हैं, वे सब इस महीने में अर्पित कर दिये हैं। मेरे समान होकर यह अधिमास अन्य सभी महीनों का अधिपति बन गया है। यह महीना जगत में पूजनीय और वंदनीय है। अन्य सभी मास सकाम हैं परन्तु **यह मास निष्काम है।** जो अकाम होकर या सर्वकाम होकर इस मास की पूजा करते हैं, वे समस्त कर्मों को भस्मीभूत कर मुझे प्राप्त करते हैं। **मेरे भक्तों से कभी-कभी अपराध होता है, किन्तु इस पुरुषोत्तम-मास के भक्तों से कभी भी कोई अपराध नहीं होगा।** जो सब महामूर्ख इस अधिमास में जप-दानादि-वर्जित, सत्कर्म और स्नान आदि रहित होते हैं और देव-तीर्थ तथा ब्राह्मणों के प्रति विद्वेष करते हैं, वे सब दुष्ट अभागे परभाग्योपजीवि (दूसरे

के भाग्य के ऊपर निर्भर) होकर स्वप्न में भी किंचित मात्र सुख नहीं प्राप्त करते। इस पुरुषोत्तम मास में जो भक्तिपूर्वक मेरा अर्चन करते हैं, वे धन-पुत्र आदि का सुख भोगकर अंत में गोलोकवासी होते हैं।

पुरुषोत्तम-मास के माहात्म्य में द्रौपदी का इतिहास

पुरुषोत्तम-मास के माहात्म्य-प्रसंग में कई पौराणिक प्रसंग कथित हैं। द्रौपदी पूर्वजन्म में 'मेधा'-ऋषि की कन्या थीं। दुर्वासा मुनि के द्वारा 'पुरुषोत्तम-माहात्म्य' सुनकर भी उन्होंने इस मास की उपेक्षा की थी, इसीलिए उस जन्म में कष्ट तथा द्रौपदी-जन्म में पाँच पतियों के अधीन हुई थीं। श्रीकृष्ण के उपदेश से पाण्डवों ने द्रौपदी के साथ पुरुषोत्तम-मास-व्रत पालन कर वनवास के सारे दुःखों का अतिक्रमण किया था। यथा—

एवं सर्वेषु तीर्थेषु भ्रमन्तः पाण्डुनन्दनाः।
पुरुषोत्तम-मासाद्य-व्रतं चेरुर्विधानतः।।
तदन्ते राज्यमतुलमवापुर्गतकण्टकम्।
पूर्णे चतुर्दशे वर्षे श्रीकृष्ण-कृपया मुने।।

वाल्मीकि-कथित पुरुषोत्तम-व्रत

'दृढ़धन्वा' राजा के वृत्तांत तथा पूर्वजन्म के वृत्तांत में पुरुषोत्तम मास का माहात्म्य विशेष रूप से कथित हुआ है। वाल्मीकि मुनि ने 'दृढ़धन्वा' के प्रश्न के उत्तर में जिस व्रत का विवरण किया था, उसे नारद जी ने श्रीनारायण-ऋषि से बदरिकाश्रम में श्रवण किया था। धर्म-शास्त्र में जिस प्रकार ब्राह्मण की आन्हिक-विधि निरूपित है, उसी प्रकार ब्राह्म-मुहूर्त से पुरुषोत्तम-सेवक का कर्त्तव्य निर्णय किया गया है।

श्रीपुरुषोत्तम-मास में स्नान-विधि

श्रीपुरुषोत्तम-मास में स्नान-विधान में कहा गया है,—

समुद्रगा-नदी-स्नानमुत्तमं परिकीर्त्तितम्।
वापी-कूप-तड़ागेषु मध्यमं कथितं बुधैः।
गृहे स्नानं तु सामान्यं गृहस्थस्य प्रकीर्त्तितम्।।

(अर्थात्, समुद्रगामी-नदी में स्नान उत्तम, वापी अर्थात् सौ हाथ लम्बे जलाशय, कुआँ और तड़ाग अर्थात् पांच सौ धनु {एक धनु चार हाथ लंबा} परिमाण के जलाशय में स्नान मध्यम तथा घर में स्नान को सामान्य कहा गया है)।

श्रीपुरुषोत्तम-व्रत करने वाले व्यक्ति स्नान करने के बाद—

सपवित्रेण हस्तेन कुर्यादाचमन-क्रियाम्।
आचम्य तिलकं कूर्यादगोपी-चन्दन-मृत्स्नया।।
ऊर्द्ध्वपुण्ड्रमृजुं सौम्यं दण्डाकारं प्रकल्पयेत्।
शंख-चक्रादिकं धार्यं गोपी-चन्दन-मृत्स्नया।।

(अर्थात्, पवित्र हाथों से आचमन-क्रिया करेंगे, आचमन के बाद गोपीचन्दन के द्वारा ऊर्द्ध्वपुण्ड्र सरल, सौम्य तथा दण्डाकार तिलक रचना करेंगे। शंख, चक्र आदि चिन्ह गोपी चन्दन के द्वारा धारण करेंगे)।

श्रीश्रीराधाकृष्ण की पूजा ही पुरुषोत्तम-मास में करणीय

श्रीकृष्ण की पूजा करना ही पुरुषोत्तम-मास में कर्त्तव्य है, यथा—

पुरुषोत्तम-मासस्य दैवतं पुरुषोत्तमः।
तस्मात् सम्पूजयेद्भक्त्या श्रद्धया पुरुषोत्तमम्।।

वाल्मीकि जी ने कहा,—हे दृढ़धन्वा! पुरुषोत्तम श्रीकृष्ण ही पुरुषोत्तम मास के अधिदेवता हैं। अतएव इस मास में प्रतिदिन भक्ति-श्रद्धा के साथ पुरुषोत्तम-श्रीकृष्ण की सोलह उपचारों से पूजा करेंगे। यथा—**षोड़शोपचारैश्च पूजयेत् पुरुषोत्तमम्।**

श्रीराधाकृष्ण की युगल उपासना ही कर्त्तव्य है, यथा—

आगच्छ देव देवेश श्रीकृष्ण पुरुषोत्तम।
राधया सहितश्चात्र गृहाण पूजनं मम।।

(अर्थात्, हे देव, देवेश, हे श्रीकृष्ण, पुरुषोत्तम, तुम श्रीमती राधारानी के साथ इस स्थान पर आगमन करो और मेरी पूजा को ग्रहण करो)।

पुरुषोत्तम मास में क्या करना चाहिए

इस शास्त्र में श्रीपुरुषोत्तम-व्रत के सम्बन्ध में पहले जो समस्त विधि-नियम लिखित हुए हैं, वे-समस्त नियम, सभी वर्ण एवं धर्म-परायण धार्मिक लोगों के लिए पालनीय हैं। ग्रंथ के अंत में नैमिष-क्षेत्र में श्रीसूत गोस्वामी ने ऋषियों से यह कहा,—

भारते जनुरासाद्य पुरुषोत्तममुत्तमम्।
न सेवन्ते न शृण्वन्ति गृहासक्ता नराधमाः।।
गतागतं भजन्तेऽत्र दुर्भागा जन्मजन्मनि।
पुत्र-मित्र-कलत्राप्त-वियोगादुःखभागिनः ।।
अस्मिन्मासे द्विजश्रेष्ठा नासच्छास्त्रान्युदाहरेत्।
न स्वपेत् पर-शैय्यायां नालपेत् वितथं क्वचित्।।
परापवादान्न ब्रुयान्न कथंचित् कदाचन।
परान्नंच न भुंजीत न कुर्व्वीत परक्रियाम्।।

भारत में जन्म प्राप्त कर गृहासक्त नराधम व्यक्ति श्रीपुरुषोत्तम-व्रत कथा श्रवण और उस व्रत का पालन नहीं करते हैं। दुर्भागे लोग प्रत्येक जन्म में जन्म-मरण-भोग करते हैं तथा पुत्र-मित्र-पत्नी तथा निजजन के वियोग-जनित दुख के भागी बनते हैं। इस पुरुषोत्तम मास में हे द्विजवरगण! व्यर्थ के काव्य-अलंकार आदि असत्-शास्त्रों की चर्चा मत करना। दूसरों की शैय्या पर शयन तथा अनित्य विषयों पर चर्चा मत करना। परनिन्दा सम्बन्धी बातचीत मत करना। दूसरों का भोजन और दूसरों का कार्य भी मत करना।

पुरुषोत्तम मास में क्या नहीं करना चाहिए

वित्तशाठ्यमकुर्व्वाणो दानं दद्याद्विजातये।
विद्यमाने धने शाठ्यं कूर्वाणो रौरवं व्रजेत्।।
दिने दिने द्विजेन्द्राय दत्त्वा भोजनमुत्तमम्।
दिव्यस्याष्टमे भागे व्रती भोजनमाचरेत्।।
इन्द्रद्युम्नः शतद्युम्नो यौवनाश्वो भगीरथः।
पुरुषोत्तममाराध्य ययुर्भगवदन्तिकम्।।
तस्मात् सर्व-प्रयत्नेन संसेव्यः पुरुषोत्तमः।
सर्व-साधनतः श्रेष्ठः सर्वार्थफलदायकः।।
''गोवर्द्धनधरं वन्दे गोपालं गोपरूपिणम्।
गोकुलोत्सवमीशानं गोविन्दं गोपिकाप्रियम्।।''
कौण्डिन्येन पुराप्रोक्तमिमं मन्त्रं पुनः पुनः।
जपन्मासं नयेद्भक्त्या पुरुषोत्तममाप्नुयात्।।
ध्यायेन्नवघन-श्यामं द्विभुजं मुरलीधरम्।
लसत् पीत-पटं रम्यं सराधं पुरुषोत्तमम्।
एवं यः कुरुते भक्त्या स्वाभीष्टं सर्वमाप्नुयात्।।

वित्तशाठ्य (धन रहते हुए भी भगवान् की सेवा में कृपणता) को त्यागकर ब्राह्मणों को दान करेंगे। धन रहते हुए भी कृपणता, रौरव नरक में जाने का कारण बन जाती है। प्रतिदिन वैष्णवों तथा ब्राह्मणों को उत्तम भोजन करायेंगे। व्रती व्यक्ति स्वयं दिन के आठवें भाग में भोजन करेंगे। इन्द्रद्युम्न, शतद्युम्न, यौवनाश्व तथा भगीरथ ने श्रीपुरुषोत्तम की आराधना कर भगवान् के निकट वास लाभ किया था। सर्वप्रकार के यत्न के साथ पुरुषोत्तम की सेवा करेंगे। यह पुरुषोत्तम-सेवा सब प्रकार के साधन की अपेक्षा श्रेष्ठ और सर्वार्थ फलदायक है। **'गोवर्द्धनधरं'** आदि मंत्र को पहले कौण्डिण्य मुनि ने बारम्बार जप किया था। श्रीपुरुषोत्तम मास में इस मन्त्र को भक्तिपूर्वक जप करने से पुरुषोत्तम भगवान् प्राप्त होंगे। नव-घन द्विभुज मुरलीधर पीताम्बर

श्रीकृष्ण का श्रीराधाजी के साथ सदैव ध्यान करते हुए पुरुषोत्तम-मास को बितायेंगे। जो भक्ति सहित ऐसा करेंगे, वे समस्त अभीष्ट लाभ करेंगे।

श्रीपुरुषोत्तम-मास-कृत्य

श्रीपुरुषोत्तम-मास में जिन समस्त नियमों का पालन करना होगा, वे वाल्मीकि जी द्वारा इस प्रकार वर्णित हैं—

''हविष्यान्नं च भुंजीत प्रयतः पुरुषोत्तमे।
गोधूमाः शालयाः सर्वाः सिता मुद्गा यवास्तिलाः।।
कलाय-कंगुनी-वारा वास्तुकं हिलमोचिका।
आद्रकं काल-शाकंच मूलं कन्दंच कर्कटीम्।।
रम्भा सैन्धव-सामुद्रे लवणे दधि-सर्पिषी।
पयोऽनुद्धृत-सारंच पनसाम्र-हरितकी।।
पिप्पली-जीरकंचैव नागरं चैव तिन्तिड़ी।
क्रमुकं लवली-धात्री फलान्यगुड़मैक्षवम्।।
अतैल-पक्वं मुनयो हविषां प्रवदन्ति च।
हविष्य-भोजनं नृणामुपवास-समं विदुः।।''

पुरुषोत्तम-व्रती व्यक्ति हविष्यान्न भोजन करेंगे। गोधूम (गेहूँ), शालि-तण्डुल (शालि-चावल), मुद्‌ग (मूंग दाल), यव (जौ), तिल मटर, कांगनी-तण्डुल (कांगनी-चावल), ऊड़ी-तण्डुल (ऊड़ी-चावल) वास्तुक-शाक (वास्तुक-साग), हिलमोचिका-शाक (हिलंचा साग), आद्रक, काल-साग, मूलक (मूली), कन्दमूल, काँकुड़ (ककड़ी), रम्भा (केला), सैन्धव तथा समुद्री नमक, दही, घी, अनुधृत-दुग्धसार, पनस (कटहल), आम्र (आम) हरितकी (हरड़), पिप्पली, जीरा, सौंठ, तेंतुल (ईमली), क्रमुक (शहतूत फल), आता (सीताफल), आमलकी-फल (आंवला), इक्षुजात (गन्ने के रस से निर्मित) चीनी, मिश्री, बिना तेल के पकायी गई सब्ज़ियाँ—**ये समस्त हविष्यान्न हैं। उपवास और हविष्यान्न में एक ही प्रकार का फल होता है।**

परित्यज्य वस्तु तथा आचरण

''सर्वामिषाणि मांसंच क्षौद्रं सौवीरकं तथा।
राजमासादिकं चैव राजिका मादकं तथा।।
द्विदलं तिल-तैलंच तथान्नं शाल्य-दूषितम्।
भाव-दुष्टं क्रिया-दुष्टं शब्द-दुष्टंच वर्जयेत्।।
परान्नंच परद्रोहं पर-दार-गमं तथा।
तीर्थं विना प्रयाणंच परदेशं परित्यजेत्।।
देव-वेद-द्विजानांच गुरु-गो-व्रतिनां तथा।
स्त्री-राज-महतां निन्दां वर्जयेत् पुरुषोत्तमे।।''

सभी प्रकार का आमिष, मांस, मधु, कुलर्कटी-फल, राई-सरसों तथा समस्त प्रकार के मादक-द्रव्यों का परित्याग करेंगे। द्वि-दल अर्थात् चना आदि की दाल, तिल-तेल, कंकड़-युक्त अन्न, भाव-दुष्ट, क्रिया-दुष्ट तथा शब्द-दुष्ट समस्त द्रव्यों का वर्जन करेंगे। परान्न-भोजन, परद्रोह, परदार-गमन, तीर्थ यात्रा के बिना दूरदेश गमन या परदेश गमन त्याग करेंगे। पुरुषोत्तम मास में देवता, वेद, गुरु, गाय, व्रती, नारी, राजा और महत्‌जनों की निंदा नहीं करेंगे।

आमिष किसे कहते हैं?

''प्राण्यंगमामिषं चूर्णं फले जम्बीरमामिषम्।
धान्ये मसूरिका प्रोक्ता अन्नं पर्युषितं तथा।।
अजा-गो-महिषी-दुग्धादन्य-दुग्धादि-चामिषम्।
द्विज-क्रीता रसाः सर्वे लवणं भूमिजं तथा।।
ताम्र-पात्रस्थितं गव्यं जलं चर्मणि संस्थितम्।
आत्मार्थं पाचितं चान्नमामिषं तद्‌बुधैः स्मृतम्।।''

जन्तु के अंगों से उत्पन्न चूर्ण—आमिष है तथा फलों में जम्बीर अर्थात् एक विशेष प्रकार का नींबू—आमिष है। अनाज में मसूर तथा बासी अन्न—आमिष है। बकरी, गाय तथा भैंस के दूध के

अलावा अन्य सभी दूध ही आमिष हैं। ब्राह्मणों के द्वारा विक्रय किये गये नमक तथा भूमि से उत्पन्न नमक, ताम्बे के पात्र में रखा गव्य (घी, दूध आदि), चमड़े में रखा जल तथा स्वयं खाने के लिए बनाया गया अन्न—**आमिष में गिने जाते हैं**।

वर्जनीय द्रव्य आदि

"रजस्वलां त्यजन् म्लेच्छ-पतितैर्व्रात्यकैः सह।
द्विज-द्विट्-वेद-वाह्यैश्य न वदेत् पुरुषोत्तमे।।
एभिः दृष्टं च काकैश्च सूतकान्नं च यद्भवेत्।
द्विपाचितं च दग्धान्नं नैवाद्यात् पुरुषोत्तमे।।
पलाण्डुं लशूनं मुस्तां छत्राकं गृंजनं तथा।
नालिकं मूलकं शीघ्रं वर्जयेत् पुरुषोत्तमे।।
यद्-यद् यो वर्जयेत् किंचित पुरुषोत्तम-तुष्टये।
तत्पुनर्ब्राह्मणे दत्त्वा भक्षयेत् सर्वदैव हि।।"

रजस्वला, म्लेच्छ, पतित, व्रात्य-व्यक्ति (पतित-ब्राह्मण) ब्राह्मण-द्वेषी, वेद-बाह्य, इन सबके साथ वार्तालाप नहीं करेंगे। इन सब लोगों के द्वारा देखे गये तथा कौअे द्वारा देखे गये अन्न, सूतक-अन्न, द्विपाचित-अन्न तथा जले हुए अन्न को नहीं खायेंगे। प्याज, लहसुन, मुस्ता (एक प्रकार की जड़), छत्राक (मशरूम), गाजर, नालिता (लौकी), केमुक-नामक-मूलक, सजिना (एक प्रकार की फली)—**इन सब का वर्जन करेंगे**। पुरुषोत्तम मास बीत जाने पर उन सब वर्जित द्रव्यों को ब्राह्मण को देने के बाद भोजन करेंगे।

पुरुषोत्तम, कार्तिक तथा माघ—
तीनों महीनों में एक ही कृत्य तथा त्रिविध व्रत

"ब्रह्मचर्यमधः शय्यां पत्रावल्यांच भोजनम्।
चतुर्थकाले भुक्तिं च प्रकूर्यात् पुरुषोत्तमे।।

कुर्यादेतांश्च नियमान्व्रती 'कार्तिक-माघयोः'।
पुण्येहि प्रातरुंथाय कृत्वा पौर्वाह्णिकीः क्रियाः।।
गृह्णीयान्नियमं भक्त्या श्रीकृष्णंच हृदि स्मरन्।
उपवासस्य नक्तस्य चैकभुक्तस्य भूपते।।
एवंच निश्चयं कृत्वा व्रतमेतत् समाचरेत्।''

ब्रह्मचर्य अर्थात् अमैथुन, भूमि-शयन, पत्तों पर भोजन, चतुर्थ प्रहर में भोजन पुरुषोत्तम-मास में उचित है। **कार्तिक तथा माघ में भी इन समस्त नियमों का व्रत करेंगे।** सुबह उठकर पूर्वान्ह-काल की क्रियाएँ सम्पन्न कर श्रीकृष्ण को भक्ति सहित हृदय में स्मरण कर पूर्वोक्त नियमों को ग्रहण करेंगे। **व्रत तीन प्रकार का है अर्थात् उपवास, रात्रि में हविष्यान्न-ग्रहण और एक-भोजन**—व्रती व्यक्ति के लिए जो कर्त्तव्य (उपयुक्त) बोध हो, उसका निश्चय (विचार) कर इस व्रत का पालन करेंगे।

पुरुषोत्तम-मास में श्रीमद्भागवत-श्रवण तथा व्रत-पालन का फल

''श्रीमद्भागवतं भक्त्या श्रोतव्यं पुरुषोत्तमे।।
तत्पुण्यं वचसा वक्तुं विधाता हि न शक्नुयात्।
शालग्रामार्चनं कार्यं मासे श्रीपुरुषोत्तमे।।
एतन्मासव्रतं राजन् श्रेष्ठं क्रतुशतादपि।
क्रतुं कृताप्नुयात् स्वर्गं गोलोकं पुरुषोत्तमे।।
पृथिव्यां यानि तीर्थानि क्षेत्राणि सर्वदेवताः।
तद्देहे तानि तिष्ठन्ति यः कुर्यात् पुरुषोत्तमम्।।''

पुरुषोत्तम-मास में, भक्तिपूर्वक श्रीमद्भागवत-ग्रंथ श्रवण करेंगे। भागवत-श्रवण के पुण्य के विषय में विधाता भी नहीं कह सकते हैं। भक्तगण श्रीशालिग्राम-शिला का अर्चन करेंगे। इस मास में व्रत—सौ क्रतु (यज्ञ) की अपेक्षा श्रेष्ठ है। क्योंकि यज्ञ करने से स्वर्ग

लाभ होता है; किन्तु जो पुरुषोत्तम-व्रत का पालन करते हैं, उनकी देह में समस्त तीर्थक्षेत्र तथा देवतागण विराजते हैं।

दीप-दान और उसका फल

''कर्त्तव्यं दीप-दानंच पुरुषोत्तम-तुष्टये।
तिल-तैलेन कर्त्तव्यं सर्पिषा वैभवे सति।।
तयोर्म्मध्ये न किंचित्ते कानने वसतोऽधुना।
इंगदीजेन तैलेन दीपः कार्यस्त्वयानम।।
योगो ज्ञानं तथा सांख्यं तंत्राणि सकलान्यपि।
पुरुषोत्तम-दीपस्य कलां नार्हन्ति षोड़शीम्।।''

पुरुषोत्तम की तुष्टि के लिए दीपदान करना कर्त्तव्य है। वैभव (सामर्थ्य) होने पर घी का दीपक, नहीं तो तिल तेल का दीपक प्रज्ज्वलित करने का नियम है। हे मणिग्रीव! तुम्हारे वनवास में घी या तिल-तेल नहीं मिलेगा। तुम इंगुदि (अरण्डी) के तेल से दीपदान करो। अष्टांग-योग, ब्रह्म-ज्ञान तथा सांख्य-ज्ञान एवं समस्त तांत्रिक-क्रिया—पुरुषोत्तम-मास में दीपदान की सोलहवीं कला के समान भी नहीं है।

पुरुषोत्तम-मास में कृष्णपक्ष की चतुर्दशी, नवमी तथा अष्टमी तिथियों में विशेष क्रिया का वर्णन

इस व्रत का उद्यापन करने के सम्बन्ध में, वाल्मीकि जी ने कहा,—हे महाराज! पुरुषोत्तम-मास में कृष्णपक्ष की चतुर्दशी, नवमी तथा अष्टमी तिथि को इस व्रत का उद्यापन किया जाता है। विशुद्ध भक्त-ब्राह्मण को निमंत्रण कर एकाग्र चित्त से उद्यापन क्रिया को करना चाहिए। पंच-धान्य (पाँच प्रकार के अनाज) द्वारा अतिसुन्दर सर्वतोभद्र (सिंहासन) की रचना करेंगे। मण्डल के उपर चार कलशों को स्थापित कर चारों ओर चतुर्व्यूह (वासुदेव, संकर्षण, प्रद्युम्न,

अनिरुद्ध) की प्रीति-कामना से बेल-फल रखेंगे। सद्-वस्त्रों से घिरे पान के पत्ते से चतुर्व्यूह स्थापित करेंगे। **श्रीराधा-माधव को कलश सहित स्थापित करेंगे। वेद-वेदांग-विशारद वैष्णवाचार्य को वरण करेंगे।** चतुर्व्यूह जपकर—चारों ओर, चार दीप प्रज्ज्वलित करेंगे।

अर्घ्य-मन्त्र तथा नमस्कार-मन्त्र

क्रमशः श्रद्धा-भक्ति के साथ पत्नी सहित नारियल आदि अर्घ्य दान करेंगे। अर्घ्य-मन्त्र,—

''**देव देव नमस्तुभ्यं पुराण-पुरुषोत्तम।**
गृहाणार्घ्यं मया दत्तं राधया सहित हरे।।''

यह मन्त्र बोलकर नमस्कार करेंगे,—

''**वन्दे नवघन-श्यामं द्विभुजं मुरलीधरम्।**
पीताम्बरधरं देवं सराधं पुरुषोत्तमम्।।''

आरति, ध्यान तथा पुष्पांजलि मंत्र

इसके बाद तिल-होम करके आरति करेंगे। नीराजन (आरति) मंत्र—

''**निराजयामि देवेशमिन्दीवर-दलच्छविम्।**
राधिका-रमणं प्रेम्णा कोटि-कन्दर्प-सुन्दरम्।।''

अथ ध्यान-मंत्र—

''**अन्तर्ज्योतिरनन्त-रत्न-रचिते सिंहासने संस्थितम्।**
वंशीनाद-विमोहित-व्रजवधू वृन्दावने सुन्दरम्।।
ध्यायेद् राधिकया सकौस्तुभमणि-प्रद्योतितोरस्थलम्।
राजद्रत्न-किरीट-कुण्डलधरं प्रत्यग्र-पीताम्बरम्।।''

ध्यान करते हुए पुष्पांजलि अर्पण करेंगे और इस मंत्र के साथ नमस्कार करेंगे—

''नौमि नवघन-श्यामं पीतवाससमच्युतम्।
श्रीवत्स-भासितोरस्कं राधिका-सहितं हरिम्।।''

व्रत का अंतिम-कृत्य तथा नियम-भंग करने की विधि

इसके बाद भक्त-ब्राह्मण को पूर्णपात्र दान कर आचार्य को दक्षिणा देंगे, तत्पश्चात् दान करेंगे। इस समय उपयुक्त वैष्णव-ब्राह्मण को भागवत दान करने की विधि है। ब्राह्मण को संपुटित कांस्य-पात्र दान करेंगे तथा ब्राह्मणों को घी-युक्त-खीर का भोजन करायेंगे। बाद में सबको अन्न प्रदानकर स्वजनों के साथ भोजन करेंगे। उद्यापन करके व्रत-नियम त्याग करेंगे।

स्वनिष्ठ, परिनिष्ठित तथा निरपेक्ष परमार्थी के कृत्य

परमार्थी तीन प्रकार के हैं—अर्थात् स्वनिष्ठ (श्रद्धालु किन्तु अदीक्षित व्यक्ति), परिनिष्ठित (वैष्णव गुरु के आश्रित) तथा निरपेक्ष (गृह-त्यागी भक्त)। पूर्वोक्त समस्त कार्य **स्वनिष्ठ-परमार्थी** के लिये विधेय हैं। **परिनिष्ठित भक्त मण्डली** अपने-अपने आचार्यों के द्वारा निर्धारित 'कार्तिक-मास-व्रत-पालन'-नियमानुसार 'पुरुषोत्तम-व्रतपालन' करने के अधिकारी हैं। निरपेक्ष भक्तगण ऐकान्तिकी प्रवृत्ति के द्वारा 'श्रीभगवत्-प्रसाद-सेवन'-नियम के साथ दिन रात साध्यानुसार 'श्रीहरिनाम-श्रवण -कीर्तन' के द्वारा समस्त पवित्र मास व्यतीत करते हैं। जैसे श्रीहरिभक्ति-विलास में चरम-उपदेश में विष्णुरहस्य वाक्य है—

इन्द्रियार्थेष्वसक्तानां सदैव विमला मतिः।
परितोषयते विष्णुं नोपवासो जितात्मनः।।

जिनकी मति भक्तिपूत (भक्ति के द्वारा पवित्र) होकर इन्द्रियों की भोग्य वस्तुओं के प्रति अनासक्त है, उनकी मति स्वाभाविक रूप से विमला (निर्मल) है, अतः वे जितात्मा (इन्द्रजीत)—सब समय ही स्वाभाविकी भक्ति के द्वारा श्रीकृष्ण को संतुष्ट करते हैं। उपवास आदि उनकी चित्त-शुद्धि का कारण नहीं हो सकता है। अतएव

श्रीसनातन गोस्वामी ने एकान्तिकियों के संबंध में यह कहकर ग्रंथ समाप्त किया है।

ऐकान्तिक-भक्तों का माहात्म्य

एवमेकान्तिनां प्रायः कीर्तनं स्मरणं प्रभोः।
कुर्वतां परमप्रीत्या कृत्यमन्यन्न रोचते।।
भावेन केनचित् प्रेष्ठ-श्रीमूर्त्तेरंघ्रि-सेवने।
स्यादिच्छैषां स्वतंत्रेण स्वरसेनैव तद्विधिः।।
विहितेष्वेव नित्येषु प्रवर्त्तन्ते स्वयं हि ते।
इत्याद्येकान्तिनां भाति माहात्म्यं लिखितं हि तत्।।

एकान्त कृष्ण-भक्तों को श्रीकृष्ण-स्मरण तथा श्रीकृष्ण-कीर्तन ही अत्यंत प्रिय है। प्राय ही वे इन दो अंगों के अलावा और किसी अंग में व्यस्त नहीं होते हैं। परम प्रीति के साथ उक्त दोनों अंगों के पालन में इतना आग्रह है कि वे अन्य समस्त कार्यों में रुचि नहीं ले पाते हैं। श्रीकृष्ण की चरण-सेवा किसी विशेष भाव के साथ करने की उनकी इच्छा प्रबल होती है, अतः कुछ स्वतंत्रता के साथ एवं अपने रस के अनुकूल-भाव अनुसार कृष्ण की चरण-सेवा ही उनकी विधि है। ऋषियों ने जो सब विधि-नियम दिये हैं, उनमें ऐकान्तिकी-भक्तों के लिए विधि-बाध्य-भाव नहीं है। स्वयं प्रवृत्ति भाव ही स्वाभाविक रूप से विद्यमान है। यही अनन्य भक्तों की महिमा है।

अपने-अपने अधिकार अनुसार यह व्रत पालनीय

भक्तो! स्वनिष्ठ, परिनिष्ठित तथा एकान्त भाव के आधार पर यथाधिकार श्रीपुरुषोत्तम मास का पालन करने में प्रवृत्त होना चाहिए। भगवान् व्रजनाथ श्रीकृष्ण इस मास के अधिपति हैं। अतः अधिमास भक्त मात्र के लिए ही प्रिय मास है, चूँकि घटनाक्रम में इस मास में कोई कर्मकाण्ड की पीड़ा आकर भक्ति में व्यवधान नहीं पहुँचा सकती है।